ई-दृष्टि नवत्र

2022

उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड

परीक्षा हेतु...

TGT / PGT

रिमाइंडर

4

सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत
भाग-1 इतिहास
भाग-2 नागरिक शास्त्र
भाग-3 भूगोल
प्रकाश्य...

सामाजिक विज्ञान

अर्थशास्त्र

- कम समय में सारगर्भित अध्ययन
- महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तथ्यों का सार संकलन

ई-दृष्टि नवत्र प्रस्तुति

संस्करण - 2022
मूल्य - 80/-

➢ संपादकीय कार्यालय :
ई-दृष्टि नवत्र
9/27A, चर्चलेन, प्रयागराज (इलाहाबाद) - 211002
➢ फोन : 9696431507
➢ ई-मेल : caedristi@gmail.com
➢ वेबसाइट : www.edristi.in
➢ संपर्क समय :
दोपहर 12 से सायं 8 बजे तक (सोमवार से शुक्रवार)

➢ © **ई-दृष्टि नवत्र** - किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित
➢ सभी विवादों का निबटारा इलाहाबाद की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरम में किया जाएगा।

संकलन सहयोग-
➢ **शिव शंकर तिवारी**
➢ **राज कुमार श्रीवास्तव**
➢ **अभिषेक कुमार**
➢ **शशिचंद्र उपाध्याय**
➢ **राहुल कुमार धुरिया**
➢ **विक्की राज**

समारंभ

परीक्षा तिथि के पूर्व के कुछ दिन बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। इसमें परीक्षार्थियों पर यह मानसिक दबाव रहता है कि क्या पढ़ें और क्या छोड़ें? इस मनोदशा में किसी संक्षिप्त अध्ययन की तीव्र आवश्यकता प्रतीत होती है। यह संक्षिप्त अध्ययन पूर्व परीक्षाओं के प्रश्नों का हो सकता है तथा उसी प्रवृत्ति के अन्य संभावित प्रश्नों का हो सकता है। इसी उद्देश्य को रखकर हमने **TGT/PGT रिमाइंडर** शृंखला प्रस्तुत किया है, जिसमें पूर्व परीक्षाओं के उत्तरों को **वन लाइनर** के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शृंखला की इस कड़ी में हमने **अर्थशास्त्र** विषय पर पूर्व परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत किए हैं, साथ ही UGC/NET तथा अन्य संभावित प्रश्नों को अध्यायवार प्रस्तुत किया है। इससे कम समय में परीक्षार्थियों को रिवीजन करने का लाभ प्राप्त होगा और प्रश्नों के उत्तर उनके मन-मस्तिष्क में बैठ जाएंगे। आशा है कि परीक्षार्थी इससे लाभान्वित होंगे।

अनुक्रमणिका

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र 3- 23
- **A.** आर्थिक सिद्धांत
- **B.** उपभोक्ता व्यवहार
- **C.** उत्पादन फलन, लागत एवं आय
- **D.** मूल्य निर्धारण
- **E.** वितरण का सिद्धांत

2. समष्टि अर्थशास्त्र ..... 24 - 30
- **A.** राष्ट्रीय आय
- **B.** रोजगार का सिद्धांत
- **C.** उपभोग तथा निवेश फलन
- **D.** व्यापार चक्र का सिद्धांत

3. लोक वित्त ..... 31 - 40
- **A.** आशय तथा बजट
- **B.** राजकोषीय नीति
- **C.** करों का वर्गीकरण

4. मौद्रिक अर्थशास्त्र ..... 41 - 51
- **A.** मुद्रा का परिमाण सिद्धांत
- **B.** मुद्रा एवं बैंकिंग
- **C.** मुद्रास्फीति
- **D.** मुद्रा की मांग-पूर्ति तथा ब्याज दर

5. अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र ..... 52 - 62
- **A.** अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धांत
- **B.** वाणिज्यिक नीति
- **C.** भुगतान संतुलन
- **D.** अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं

6. संवृद्धि एवं विकास ..... 63 - 70
- **A.** आर्थिक विकास तथा मूल समस्याएं
- **B.** आर्थिक विकास के सिद्धांत
- **C.** वृद्धि मॉडल

7. भारतीय अर्थव्यवस्था ..... 71 - 82
- **A.** विकास तथा नियोजन
- **B.** कल्याणकारी योजनाएं
- **C.** जनसंख्या एवं नगरीकरण
- **D.** कृषि तथा उद्योग

8. सांख्यिकी ..... 83 - 85

9. विविध ..... 86 - 88

1 व्यष्टि अर्थशास्त्र

A. आर्थिक सिद्धांत

☞ अर्थशास्त्र के अध्ययन की आगमन रीति का श्रेय दिया जाता है **— जर्मनी की ऐतिहासिक विचारधारा को**

☞ एंजेल के उपभोग का नियम (पारिवारिक व्यय) तथा माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत आधारित है **— आगमन तर्क पर**

☞ तर्क की वह प्रक्रिया जिसमें एक अंश से संपूर्ण की ओर, विशेष से सामान्य की ओर या व्यष्टि से समष्टि की ओर जाया जाता है **— आगमन विधि में**

☞ आगमन विधि को ''एक आरोही प्रक्रिया'' (An assending Process) बताया है **— बेकन ने**

☞ अर्थशास्त्र प्रारंभिक तौर पर अध्ययन करता है **— धन का**

☞ प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों तथा विशेष रूप से अर्थशास्त्र के जन्मदाता कहे जाने वाले एडम स्मिथ ने अर्थशास्त्र को कहा **— 'धन का विज्ञान'**

☞ एडम स्मिथ की पुस्तक ''राष्ट्रों के धन की प्रकृति एवं कारणों की खोज'' प्रकाशित हुई? **— वर्ष 1776 में**

☞ ''अर्थशास्त्र का जनक'' कहा जाता है **— एडम स्मिथ को**

☞ पहले अर्थशास्त्री जिन्होंने बताया कि 'उत्पादन का मुख्य साधन श्रम' है **— एडम स्मिथ**

☞ 'अदृश्य हाथ' (Invisible Hand) का विचार दिया **— एडम स्मिथ ने**

☞ एक निर्देशित अर्थव्यवस्था में केंद्रीय समस्याओं का समाधान किया जाता है **— केंद्रीय योजना प्राधिकरण द्वारा**

☞ निर्देशित अर्थव्यवस्था (Command economy) को कहा जाता है **— नियोजित अर्थव्यवस्था**

☞ अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्या - 'उत्पादन किसके लिए किया जाए' का संबंध है **— आय के वितरण से**

☞ किसी वस्तु तथा सेवा का कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए, संबंधित है **— वस्तुओं के चयन से**

☞ वस्तु और सेवा का उत्पादन कैसे किया जाए, संबंधित है **— तकनीक चयन से**

☞ नैतिक अथवा मूल्य निर्णय संबंधित है **— आदर्श अर्थशास्त्र से**

☞ क्या वांछनीय है तथा क्या अवांछनीय, क्या होना चाहिए या क्या नहीं होना चाहिए का अध्ययन करता है **— आदर्श अर्थशास्त्र**

☞ 'क्या है' का संबंध है **— वास्तविक आर्थिक विश्लेषण से**

☞ 'क्या है' (What is) का संबंध वास्तविक या यथार्थ आर्थिक विश्लेषण से संबंधित होता है, जबकि 'होना चाहिए' (What should be) संबंधित है **— आदर्श आर्थिक विश्लेषण से**

☞ सूर्य की किरणें, मां का मातृत्व, एक पेड़ की छाया तथा आभूषण में से किस एक को अर्थव्यवस्था में धन माना जाता है **— आभूषण को**

☞ अर्थशास्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि ''यह जीवन के साधारण व्यापार में मानवजाति का एक अध्ययन है'' **— मार्शल ने**

☞ धन के स्थान पर मनुष्य के कल्याण पर बल दिया **— मार्शल ने**

☞ ''धन मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य धन के लिए'' अर्थात मनुष्य का कल्याण सबसे महत्वपूर्ण है। किसने कहा **— मार्शल ने**

☞ ''धन स्वयं एक लक्ष्य नहीं है, यह लक्ष्य का एक माध्यम है और एकमात्र लक्ष्य मानव कल्याण है।'' यह कथन है **— मार्शल का**

☞ पीगू, मार्शल, क्लार्क तथा रिकॉर्डो में से किस एक अर्थशास्त्री द्वारा अर्थशास्त्र को मानवीय जीवन की सामान्य क्रियाओं के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया गया है **— मार्शल द्वारा**

☞ अर्थशास्त्र की किस परिभाषा के लिए उसे 'घृणित विज्ञान' कहकर आलोचना की गई है **— अर्थशास्त्र धन का अध्ययन है**

☞ भूमि को जोतना अर्थशास्त्र में माना जाएगा **— उत्पादन**

☞ जिस क्रिया के द्वारा किसी वस्तु या सेवा में उपयोगिता का सृजन किया जाता है, उसे कहते हैं **— 'उत्पादन'**

☞ उत्पादन की सर्वोत्तम परिभाषा के अनुसार, उत्पादन होता है- **— वस्तु में उपयोगिता का सृजन एवं उसके मूल्य में वृद्धि**

☞ ''अर्थशास्त्र साध्यों के मध्य तटस्थ रहता है'', यह विचार प्रकट किया **— रॉबिन्स ने**

☞ ''अर्थशास्त्र संसाधनों की कमी से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अध्ययन करता है''। यह विचार है **— रॉबिन्स का**

☞ आर्थिक समस्या का संबंध है **— संसाधनों की दुर्लभता से**

☞ अर्थशास्त्र में चयन की समस्या उत्पन्न होती है, क्योंकि **— संसाधनों के वैकल्पिक उपयोग होते हैं**

☞ ''अर्थशास्त्र वह विज्ञान है, जो साध्यों और वैकल्पिक उपयोगों वाले दुर्लभ साधनों के संबंध में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है'' परिभाषित किया है **— रॉबिन्स ने**

☞ भौतिक परिभाषा के अंतर्गत नहीं है **— रॉबिन्स की परिभाषा**

☞ ''राज्य अर्थव्यवस्था ने परिभाषाओं से अपना गला घोंट डाला है'', यह कथन है **— कीन्स का**

☞ अर्थशास्त्र की दुर्लभता संबंधी परिभाषा दी गई **— रॉबिन्स द्वारा**

☞ ''विभिन्न महत्व वाले लक्ष्यों की पूर्ति करने के लिए साधनों की दुर्लभता मानव आचरण की एक सर्वव्यापी समस्या है।'' यह कथन है **— रॉबिन्स का**

☞ आर्थिक विकास का परंपरावादी सिद्धांत संबंधित है **— डेविड रिकॉर्डो से**

☞ जे.एस. मिल, जे.बी.से, एडम स्मिथ तथा जे.एम. कीन्स में से प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री नहीं हैं **— जे.एम. कीन्स**

☞ अर्थशास्त्र की 'विकास केंद्रित' परिभाषा देन है **— पॉल.ए. सैम्युल्सन की**

☞ साम्य फर्म की अवधारणा दी **— पीगू ने**

☞ प्रतिनिधि फर्म का प्रतिपादन किया **— प्रो. मार्शल ने**

☞ ''ट्रेट डी इकोनॉमिक पॉलिटिक'' पुस्तक के लेखक हैं **— जे.बी.से**

☞ यदि एक सीधी मांग रेखा एक वक्र रेखीय मांग वक्र को स्पर्श करती है, तो दोनों मांग वक्रों की लोच, स्पर्श बिंदु पर होगी **— एक**

☞ ''अर्थशास्त्र चुनाव का विज्ञान है,'' यह कथन है **— रॉबिन्स का**

☞ 'Nature and Significance of Economic Science' पुस्तक है, **— रॉबिन्स की**

☞ 'सेटेरिस पैरिबस' लैटिन भाषा का शब्द है। जिसका सामान्य अर्थ हैं **— ''यदि अन्य बातें समान रहें''**

☞ किसी विशिष्ट विषय से संबंधित समस्त प्रासंगिक तथ्यों को एक साथ संगृहीत करने वाले अर्थशास्त्र को कहा जाता है? **— विश्लेषणात्मक अर्थशास्त्र**

☞ मकड़जाल मॉडल के अनुसार, स्थायी संतुलन की अवस्था प्राप्त होगी **— मांग आधिक्य तथा मांग की लोच > पूर्ति की लोच की स्थिति में**

☞ यदि मांग वक्र का ढाल पूर्ति वक्र के ढाल से कम है, तो संतुलन की प्रकृति होगी **— स्थायी**

☞ आंशिक संतुलन दृष्टिकोण को कहते हैं **— मार्शलियन दृष्टिकोण**

☞ मांग एवं पूर्ति की अंत:क्रिया से कीमत निर्धारण को प्रतिपादित किया **— मार्शल ने**

☞ मांग तालिका प्रदर्शित करती है **— मांग की मात्रा तथा मूल्य में फलनात्मक संबंध**

☞ किसी निश्चित समय में एक व्यक्ति की विभिन्न कीमतों पर मांग को प्रदर्शित करने वाली तालिका कहलाती है **— 'व्यक्तिगत मांग तालिका'**

☞ मांग एवं आपूर्ति वक्र का विच्छेदन बिंदु निर्धारण करता है **— संतुलन कीमत, मांग तथा आपूर्ति सभी का**

☞ मुद्रा की मांग है **— व्युत्पन्न मांग**

☞ श्रम की मांग कहलाती है **— व्युत्पन्न मांग**

☞ साधनों की मांग को 'व्युत्पन्न मांग' कहा जाता है, क्योंकि **— इसका उद्‌गम अंतिम वस्तु की मांग से होता है**

☞ किसी वस्तु की पूर्ति से बोध होता है **— समय की प्रति इकाई पर मूल्य-विशेष पर विक्रय हेतु प्रस्तुत वस्तु की मात्रा**

☞ स्थिर संतुलन में, साम्य **— मूल संतुलन की ओर लौटती है**

☞ पीगू के अनुसार, स्थिर साम्य का उदाहरण है **— भारी पेंदी वाला जहाज**

☞ 'साम्य' से अभिप्राय **— परिवर्तनहीनता की स्थिति, उपभोक्ता को अधिकतम उपयोगिता की प्राप्ति तथा उत्पादन न्यूनतम लागत पर होता है।**

☞ साम्य एक स्थिति है, जहां पर **— एक उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है, एक उत्पादक अधिकतम लाभ प्राप्त करता है तथा एक फर्म अधिकतम उत्पादन प्राप्त करता है।**

☞ सामान्य कीमत है **— दीर्घकालीन कीमत**

☞ प्रथम बार किस अर्थशास्त्री ने 'व्यष्टि' एवं 'समष्टि' अर्थशास्त्र जैसे पदों का प्रयोग किया **— रैग्नर फ्रिश ने**

☞ व्यष्टि अर्थशास्त्र को आर्थिक विश्लेषण की प्रणाली के रूप में विकसित और संपन्न करने का श्रेय जाता है **— मार्शल को**

☞ सूक्ष्म अर्थशास्त्र का संबंध है **— वस्तु कीमत निर्धारण सिद्धांत से**

☞ 'संकलन की समस्या' से संबंधित अर्थशास्त्री है **— विकस्टीड का**

☞ अर्थशास्त्रियों के किस समूह ने बाजार अर्थव्यवस्था का समर्थन किया था **— एडम स्मिथ, रिकार्डो, जे.के. गैलब्रेथ आदि ने**

☞ परंपरावादियों से कीन्स का तात्पर्य था **— रिकार्डो के अनुयायियों से**

☞ अर्थशास्त्र में 'आवश्यकता विहीनता का सिद्धांत' दिया है **— जमशेद काइखुसरो मेहता (जे. के. मेहता) ने**

☞ अर्थशास्त्र एक विज्ञान है, जो मानवीय व्यवहार की 'इच्छारहित अवस्था' या 'इच्छा विहीनता की स्थिति तक पहुंचने के साधन के रूप में अध्ययन करता है।' अर्थशास्त्र की परिभाषा को इस रूप में व्यक्त किया **— प्रो. जे. के. मेहता ने**

☞ ''अर्थशास्त्र प्रकाश-दर्शक विज्ञान न होकर एक फलदायक विज्ञान है'', कहा **— प्रो. पीगू ने**

☞ 'इच्छाओं से मुक्ति पाना ही आर्थिक समस्या है' कहा था **— जे.के. मेहता ने**

☞ लीनियर प्रोग्रामिंग के विचार को देने का श्रेय दिया जाता है **— अमेरिकी गणितज्ञ डेन्टजिंग को**

☞ पारम्परिक अर्थशास्त्रियों का सही कालक्रम है - **— (I) एडम स्मिथ, (II) रिकार्डो, (III) माल्थस, (IV) जे.एस. मिल**

☞ 'बुद्धवादी अर्थशास्त्र के जन्मदाता हैं **- ई.एफ. शुमाकर**

☞ मूल बिंदु से गुजरती हुई रैखिक आपूर्ति वक्र की कीमत लोच होगी **— इकाई**

☞ निम्नलिखित कालक्रमानुसार व्यवस्थित है- **— शास्त्रीय अर्थशास्त्र, केंसीय अर्थशास्त्र, मुद्रावाद तथा विवेकी प्रत्याशा का सिद्धांत**

B. उपभोक्ता व्यवहार

☞ किसी वस्तु की सीमांत उपयोगिता किसी वस्तु से है,
— जब उपभोक्ता किसी वस्तु की अतिरिक्त इकाइयां खरीदता है, तो उसकी कुल उपयोगिता में आया परिवर्तन

☞ विकास के आधार पर निम्नलिखित सिद्धांतों का कालक्रम निम्न है
— मांग का नियम → ह्रासमान सीमांत उपयोगिता नियम (गोसेन का प्रथम नियम) → क्रमवाचक उपयोगिता सिद्धांत (हिक्स एवं एलेन) → प्रकट अधिमान सिद्धांत सैम्युल्सन

☞ अधिकांश उपभोक्ताओं के लिए दूध और चाय स्थानापन्न वस्तुएं हैं। इसलिए दूध के मूल्य में वृद्धि से हमें आशा करनी चाहिए कि यह होगा
— चाय के मांग-वक्र में ऊपर की ओर खिसकाव

☞ एक उपभोक्ता की बजट रेखा का एक निरपेक्ष मानचित्र पर एक समानांतर स्थिति से दाहिनी ओर जाना दर्शाता है कि
— उपभोक्ता की आय में वृद्धि हुई है

☞ गिफिन वस्तुएं होती हैं **— निम्न श्रेणी की वस्तुओं की विशेष श्रेणी**

☞ गिफिन वस्तुओं अथवा निकृष्ट वस्तुओं के संबंध में एंजेल वक्र का स्वरूप होता है **— ऋणात्मक ढाल का**

☞ सामान्य तथा विलासिता की वस्तुओं के लिए एंजेल वक्र का स्वरूप होता है **— ऊपर की ओर उठता हुआ**

☞ गिफिन वस्तु वह है, जिसकी मांग
— कीमत में वृद्धि के साथ बढ़ती है

☞ यदि वस्तु की आय मांग की लोच इकाई से अधिक हो, तो वस्तु है
— एक विलासिता की वस्तु

☞ निकृष्ट तथा गिफेन वस्तुओं के संबंध में आय लोच होती है
— ऋणात्मक ($e_y < 0$)

☞ सामान्य तथा आवश्यक वस्तुओं की आय लोच होती है
— धनात्मक परंतु इकाई से कम ($e_y < 1$)

☞ विलासिता की वस्तुओं (Luxuries) की आय लोच होती है
— इकाई से अधिक ($e_y > 1$)

☞ किसी वस्तु की मांग व्यक्त करती है
— किसी निर्दिष्ट समय अवधि के दौरान निर्दिष्ट मूल्य पर वस्तु की मांगी गई मात्रा

☞ यह मांग को निर्धारित करने वाला तत्व नहीं है **— वस्तु की लागत**

☞ मांग के नियम के अनुसार एक वस्तु के लिए मांग वक्र होगा
— नीचे की तरफ ढाल

☞ मांग की धारणा में महत्व है **— स्थान, समय तथा कीमत आदि का**

☞ मांग का नियम बताता है
— जब कीमत घटती है, तो मांग बढ़ती है।

☞ मांग वक्र के बाएं से दाएं नीचे की ओर गिरने का कारण होता है
— 'उपयोगिता ह्रास नियम'

☞ मांग का नियम आधारित है **— एक गुणात्मक कथन पर**

☞ यदि एक उत्पाद वेबलन वस्तु है, तब -
— मांग कीमत से सीधे रूप से संबंधित है

☞ वह अर्थशास्त्री, जिन्होंने कीमत निर्धारण में समय तत्व को सम्मिलित किया था **— ए. मार्शल**

☞ अनधिमान वक्र की विशेषता नहीं है **— अनधिमान वक्र आवश्यक रूप से एक-दूसरे के समांतर होते हैं**

☞ तटस्थता वक्र की विशेषता नहीं है **— लंबवत रेखा होना**

☞ दो तटस्थता वक्र एक-दूसरे को नहीं काटते क्योंकि -
— दोनों समान संतुष्टि नहीं प्रदान करते हैं

☞ उपभोक्ता के मांग वक्र को प्राप्त किया जा सकता है
— कीमत-उपभोग वक्र से

☞ उस बिंदु पर उपभोक्ता साम्य में होता है, जब बजट रेखा
— उदासीन वक्र की स्पर्श रेखा होती है।

☞ उदासीनता वक्र का ढाल प्रदर्शित करता है
— सीमांत प्रतिस्थापन दर को

☞ एक उपभोक्ता का अनुकूलतम वस्तु संयोग उस बिंदु पर स्थापित होगा
जहां**— MRS_{xy} एवं कीमत अनुपात बराबर हो तथा** $\frac{MU_1}{MU_2} = \frac{P_1}{P_2}$

☞ एक तटस्थता वक्र पर दो वस्तुओं के मध्य प्रतिस्थापन की दर मापी जाती है **— MRS द्वारा**

☞ कोई मांग फलन $x = \frac{k}{p}$ दिया गया है, जहां K स्थिरांक है। इसकी मांग की लोच होगी **— सदैव एक**

☞ एक मांग रेखा पर ऊपर से नीचे की तरफ जाने पर मांग की लोच
— घटती जाती है

☞ यदि एक व्यक्ति को अपनी सेवाओं के लिए मजदूरी दर में वृद्धि की प्रतिक्रिया में काम करते देखा जाता है, तो इसका तात्पर्य है कि
— इस व्यक्ति के लिए विश्राम एक घटिया वस्तु है

☞ प्रसिद्ध 'हीरा-पानी' विरोधाभास दिया है **— एडम स्मिथ ने**

☞ सुप्रसिद्ध ''हीरा-पानी'' विरोधाभास की व्याख्या होती है
— कुल उपयोगिता द्वारा

☞ दुर्लभता एक दशा है, जो विद्यमान होती है जब
— एक उत्पाद की संपूर्ण मांग को पूरा करने हेतु संसाधन पर्याप्त मात्रा में नहीं होते हैं

☞ उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक विचार है, इसलिए इसकी
— गणनावाचक माप नहीं की जा सकती है

☞ तटस्थता वक्र विश्लेषण आधारित है **—क्रमवाचक उपयोगिता दृष्टिकोण**

☞ उपभोक्ता व्यवहार की गणनावाचक उपयोगिता अवधारणा का प्रतिपादन किया था **— अल्फ्रेड मार्शल ने**

☞ गणना वाचक उपयोगिता सिद्धांत के अनुसार मुद्रा की सीमांत उपयोगिता- **— स्थिर रहती है**

☞ आय के बढ़ने पर उपभोग भी समानुपातिक बढ़ता है, लेकिन आय के गिरने पर यह समानुपातिक नहीं गिरता, कहलाता है **— रैचेट प्रभाव**

☞ यदि एक वस्तु की कीमत बढ़ती है, तब आय प्रभाव - **— प्रतिस्थापन प्रभाव को मजबूत करता है, यदि वस्तु सामान्य है तथा प्रतिस्थापन प्रभाव को निष्प्रभावी करता है, यदि वस्तु निकृष्ट है**

☞ सामान्य पदार्थ एवं श्रेष्ठ पदार्थ के लिए आय प्रभाव सदैव **— धनात्मक होता है**

☞ एक वस्तु जिसके लिए आय प्रभाव धनात्मक हो, कहलाती है **— सामान्य वस्तु**

☞ प्रतिस्थापन प्रभाव हमेशा होगा **— ऋणात्मक**

☞ किसी वस्तु की सीमांत उपयोगिता का संबंध होता है **— कुल संतुष्टि से**

☞ यदि मांग वक्र ''आयताकार हाइपरबोला'' हो, तो मांग की कीमत लोच होगी **— इकाई के बराबर**

☞ सभी बिंदु पर इकाई लोच की दशा में, मांग वक्र होता है **— आयताकार हाइपरबोला**

☞ ऐसी वस्तु, जिसका मांग वक्र आयताकार अतिपरवलय हो, की कीमत में कमी के कारण उस वस्तु पर कुल व्यय **— अपरिवर्तित रहता है**

☞ यदि किसी वस्तु की सभी प्रासंगिक कीमतों पर कीमत उपभोग वक्र समस्तरीय हो, तो उस वस्तु का मांग वक्र होगा **— आयताकार अतिपरवलय**

☞ एक सामान्य मांग फलन होता है, कीमत का **— एक दिश ह्रासमान फलन**

☞ मांग का नियम है **— एक गुणात्मक विवरण**

☞ एक सामान्य मांग वक्र की ढाल होती है **— ऋणात्मक**

☞ 'वेब्लेन गुड्स' (Veblen Goods) और 'गिफेन गुड्स' (Giffen Goods) के लिए मांग वक्र होता है **— अपवादस्वरूप धनात्मक**

☞ किसी वस्तु का बाजार मांग वक्र होता है **— व्यक्तिगत मांगों का क्षैतिज औसत**

☞ एक समोत्पाद वक्र एक सीधी रेखा होगी, यदि आगत **— पूर्ण स्थानापन्न हों**

☞ मांग को इस रूप में परिभाषित किया जा सकता है - **— पर्याप्त क्रय शक्ति के साथ क्रय की इच्छा एवं तत्परता**

☞ उपभोक्ता की बचत को क्रेता की बचत नाम से अभिहित किया है **— बोल्डिंग ने**

☞ मार्शल के उपभोक्ता बचत की धारणा में मान्यता है **— पूर्ण प्रतियोगिता की**

☞ सर्वप्रथम उपभोक्ता की बचत की अवधारणा प्रतिपादित की गई **— ड्यूपिट द्वारा**

☞ आवश्यक वस्तुओं के लिए उपभोक्ता बचत होती है **— अनंत**

☞ प्रकट अधिमान सिद्धांत के प्रतिपादक हैं **— सैम्युल्सन**

☞ उद्घाटित अधिमान सिद्धांत आधारित है **— आचरणवादी क्रमवाचक उपयोगिता पर**

☞ प्रकट अधिमान सिद्धांत आधारित है **— दृढ़ या सबल क्रमबद्धता पर**

☞ उपभोक्ता व्यवहार के व्यक्त अधिमान सिद्धांत की विशेषताओं विवेकशीलता, सकर्मकता, एक दिष्टता तथा संगतता में से एक मान्यता नहीं है **— एक दिष्टता**

☞ एक विवेकशील उपभोक्ता अपनी आय का आवंटन करता है **— कुल उपयोगिता को अधिकतम करने के लिए**

☞ यदि दो साधन पूर्णतः स्थानापन्न हों, तो उनके बीच प्रतिस्थापन की लोच होगी **— अनंत**

☞ 'उत्पत्ति-ह्रास नियम' उस स्थिति का नाम है, जिसमें **— सीमांत एवं औसत उत्पादन दोनों घटते हैं, किंतु दोनों धनात्मक होते हैं।**

☞ घटकों के ह्रासमान प्रतिफल का नियम प्रासंगिक है **— लघु अवधि में**

☞ अर्थशास्त्री उपभोक्ता के संदर्भ में हमेशा मानते हैं **— वे बाजार में विवेकपूर्ण निर्णय लेते हैं**

☞ उपभोक्ता साम्य की स्थिति में तब होता है, जब **— MU शून्य हो**

☞ निकट से स्थानापन्नों की प्रतिलोच **— इकाई से कम होती है**

☞ मांग की लोच दर्शाता है **— मात्रा में होने वाले परिवर्तन की दर को**

☞ किसी वस्तु की मांग की आय लोच यदि ऋणात्मक हो, तो वस्तु होगी **— घटिया वस्तु**

☞ जब एक वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के साथ उस पर कुल परिव्यय स्थिर रहता है, तब यह मामला है **— ऐकिक लोचशील मांग का**

☞ यदि दो वस्तुएं प्रतिस्थापी हैं (जैसे चाय और कॉफी), तो उनके बीच की अनुप्रस्थ लोचशीलता होती है **— धनात्मक**

☞ चाय और चीनी के बीच मांग की आड़ी लोच होती है **— ऋणात्मक**

☞ दो पूर्ण प्रतिस्थापन वस्तुओं की आड़ी लोच होगी — **अनंत**

☞ प्रतिस्थापक वस्तुओं के लिए मांग की तिरछी कीमत लोच (Cross elasticity) हमेशा होती है — **धनात्मक**

☞ एक साधन की बाजार मांग — **व्युत्पन्न मांग होती है**

☞ कुल उपयोगिता अधिकतम होती है, जब

— **सीमांत उपयोगिता शून्य होती है।**

☞ कुल उपयोगिता वक्र का गिरता हुआ भाग दर्शाता है

— **ऋणात्मक सीमांत उपयोगिता**

☞ मोड़ पर सीमांत उपयोगिता — **अधिकतम होती है**

☞ तटस्थता विधि से उपभोक्ता के संतुलन निर्धारण के लिए उदासीनता वक्र का मूल बिंदु की ओर होना आवश्यक है — **उन्नतोदर**

☞ दो उदासीन वक्र $1C_1$ और $1C_2$ एक-दूसरे को नहीं काट सकते, क्योंकि — **lc_1 और lc_2 संतोष के विभिन्न स्तरों को व्यक्त करते हैं**

☞ बाजार कीमत है — **अल्पकालीन संतुलन कीमत**

☞ तटस्थता वक्र उपभोक्ता के तटस्थ व्यवहार को दर्शाते हैं

— **वस्तुओं के संयोग के चयन के लिए**

☞ तटस्थता वक्र विश्लेषण में वस्तु X तथा Y के विभिन्न संयोगों में संबंध होता है — **वस्तु X बढ़ेगी तथा वस्तु Y घटेगी**

☞ किसी उदासीनता वक्र के प्रत्येक बिंदु पर व्यक्त किया जाता है

— **समान संतुष्टि**

☞ एक उपभोक्ता संतुलन में तब कहा जाता है, जब वह अधिकतम ..... प्राप्त करता है। — **संतुष्टि**

☞ उस बिंदु पर उपभोक्ता साम्य में होता है, जब बजट रेखा

— **उदासीन वक्र की स्पर्श रेखा होती है**

☞ उपभोक्ता संतुलन के लिए द्वितीय क्रम (Second Order) की शर्त है

— **स्पर्शिता के बिंदु पर उदासीनता वक्र मूल बिंदु के प्रति उन्नतोदर होना चाहिए**

☞ MRSxy व्यक्त करता है — **उपभोक्ता x की एक अतिरिक्त इकाई के लिए y की कितनी मात्रा का त्याग करता है और उसी उदासीनता-वक्र पर रहता है।**

☞ पूर्णतया पूरक वस्तुओं की स्थिति में तटस्थता वक्र का आकार होगा

— **एल-आकृति (L आकार)**

☞ जब उत्पादन के दो साधन पूर्णतया पूरक होंगे, तो समोत्पाद वक्र का आकार होगा — **समकोणीय**

☞ उत्पादन साधनों में प्रतिस्थापन लोच सदैव होती है — **धनात्मक**

☞ जब दो वस्तुएं पूर्ण प्रतिस्थानापन्न होती हैं, तो तटस्थता वक्र

— **एक सीधी रेखा होती है**

☞ जब दो वस्तुएं X तथा Y पूर्ण स्थानापन्न होती हैं, तो इन दोनों में सीमांत प्रतिस्थापन की दर स्थिर होगी और ऐसी स्थिति में तटस्थता वक्र रेखा का आकार — **एक ऋणात्मक ढाल वाली सीधी रेखा**

☞ यदि दो वस्तुएं प्रतिस्थापन हों, तो उदासीनता वक्र होगा

— **दो अक्षों के मध्य 45° पर सीधी रेखा**

☞ एक ही मांग वक्र पर चलन को

— **मांग में विस्तार या संकुचन कहते हैं**

☞ किसी वस्तु की कीमत में कमी होने पर उसकी मांग का बढ़ना कहलाता है — **मांग का विस्तार**

☞ अन्य बातें समान रहने पर, कीमत में वृद्धि उत्पन्न करती है

— **मांग का संकुचन**

☞ यदि मांग वक्र दाहिनी ओर विवर्तित होती, तो यह दर्शाता है

— **मांग की वृद्धि को**

☞ एक ग्राहक की क्रय शक्ति में परिवर्तन के द्वारा मांग में परिवर्तन कहलाता है — **आय प्रभाव**

☞ यदि मांग वक्र Y अक्ष के समानांतर होता है, तो मांग की कीमत लोच

— **शून्य होती है**

☞ कार, नमक, चाय तथा मकान में से मांग की कीमत लोच सबसे कम है — **नमक की**

☞ सरल रेखीय मांग वक्र कीमत अक्ष को स्पर्श करता है, उस बिंदु पर मांग की कीमत लोच होगी — **पूर्णतया लोचदार**

☞ यदि कीमत के परिवर्तन के बाद भी किसी वस्तु की मांगी जाने वाली मात्रा में कोई परिवर्तन न हो, तो मांग की कीमत लोच का गुणांक होगा

— **शून्य**

☞ यदि मांग बेलोच हो, तो कीमत वृद्धि

— **उपभोक्ता के व्यय को बढ़ा देगी**

☞ 'उत्पादन संभावना वक्र' (Production Possibility Curve) बताता है — **वस्तुओं के उत्पादन संयोग को, जो उपलब्ध साधनों से संभव है**

☞ निम्न कोटि की वस्तु के लिए आय उपभोग वक्र की ढाल हमेशा

— **पीछे की तरफ मुड़ती है**

☞ निम्न कोटि की वस्तु की स्थिति में जब आय बढ़ती है, तो

— **उसका उपयोग घटता है**

☞ उपभोक्ता किस वस्तु की कीमत घटने पर उपभोग घटा देता है?

— **गिफिन वस्तु की**

☞ सामान्यतया तटस्थता वक्र मूल बिंदु की ओर उत्तल होता है, क्योंकि सीमांत प्रतिस्थापन दर — **घटता हुआ होता है**

☞ सीमांत उपयोगिता जब शून्य होगी, तो कुल उपयोगिता

— **अधिकतम होगी**

☞ संतुष्टि के स्तर बिंदु पर, सीमांत उपयोगिता की प्रवृत्ति होती है
— शून्य

☞ 'गॉसेन का प्रथम नियम' प्रचलित है
— सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम के नाम से

☞ जब औसत उपयोगिता घट जाएगी, तो सीमांत उपयोगिता
— औसत उपयोगिता से कम होगी

☞ मांग की लोच से तात्पर्य है
— कीमत में परिवर्तन होने पर मांग में परिवर्तन
आय में परिवर्तन होने पर मांग में परिवर्तन
तथा किसी संबद्ध वस्तु की कीमत में परिवर्तन
होने पर मांग में परिवर्तन हो।

☞ एक मांग वक्र के विभिन्न बिंदुओं पर मांग की लोच
— अलग-अलग होती है

☞ प्रतिशत विधि, कुल व्यय विधि तथा बिंदु विधि में पूर्ति की लोच को मापने की विधि नहीं है **— कुल व्यय विधि**

☞ मांग की आड़ी लोच की वैज्ञानिक व्याख्या को दिया है
— रॉबर्ट ट्रिफिन ने

☞ आर्थिक सिद्धांत में मांग की लोच की संकल्पना का प्रयोग सर्वप्रथम किया है **— मार्शल ने**

☞ एक अपवाद वाला मांग वक्र वह है, जिसकी ढाल
— दाईं ओर उठती हुई होती है

☞ पूरक वस्तुओं के लिए मांग की तिर्यक लोच होती है **— ऋणात्मक**

☞ साधन कीमत अवसर लागत, चुनाव तथा दुर्लभता में से किस एक को रूपांतरण वक्र (Transformation Curve) द्वारा व्यक्त नहीं किया जाता है **— साधन कीमत को**

☞ मूल आर्थिक क्रिया है **— उपभोग**

☞ मांग वक्र को अनधिमान वक्रों की सहायता से व्युत्पन्न किया जा सकता है। सर्वप्रथम प्रदर्शित किया **— हिक्स ने**

☞ तटस्थता वक्र की संकल्पना का प्रतिपादन किया था
— हिक्स ने

☞ जब एक वस्तु की मांग में आनुपातिक परिवर्तन, कीमत में आनुपातिक परिवर्तन से अधिक है तो, यह स्थिति कहलाती है
— अत्यधिक लोचदार मांग

☞ तटस्थता वक्र विश्लेषण में एक वस्तु की कीमत में कमी के परिणामस्वरूप-
— आय एवं प्रतिस्थापन प्रभाव दोनों होते हैं

☞ एक वस्तु विलासिता की श्रेणी में आती है जब उसकी मांग की लोच
— इकाई से अधिक होती है

☞ विलासिता की वस्तु की मांग की आय लोच होगी
— सदैव धनात्मक

☞ यदि कीमत में कमी होने पर, संबद्ध वस्तु पर होने वाला व्यय बढ़ जाता है, तो ऐसी वस्तु की मांग की कीमत लोच **— बहुत अधिक होगी**

☞ अनिवार्य वस्तुओं की मांग सामान्यतः होती है **— बेलोचदार**

☞ एक अनधिमान वक्र का ढाल होता है **— ऋणात्मक**

☞ उपभोक्ता के अनधिमान वक्र की ढाल दर्शाती है
— वस्तुओं के प्रतिस्थापन की सीमांत दर को

☞ उपभोक्ता संतुष्टि स्तर के समान रहने पर Y वस्तु की एक अतिरिक्त इकई को प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता के द्वारा X वस्तु की त्याग की जाने वाली मात्रा को कहते हैं
— X के लिए Y की सीमांत प्रतिस्थापन दर

☞ उपभोक्ता की बचत उत्पादक की बचत से अधिक होगी, जब
— मांग की लोच इकाई से कम
तथा पूर्ति की लोच इकाई से अधिक हो

☞ उपभोक्ता की बचत अनंत होती है **— दुर्लभ वस्तुओं में**

☞ उपभोक्ता अतिरेक नहीं होता है
— बाजार मांग वक्र क्षैतिज होने की स्थिति में

☞ यदि आपूर्ति वक्र का ढाल धनात्मक हो, तो वस्तु की कीमत में वृद्धि के परिणामस्वरूप आपूर्ति **— बढ़ती है**

☞ सामान्य आपूर्ति वक्र की ढाल होती है **— धनात्मक**

☞ सामान्य मांग फलन का ढाल होता है **— ऋणात्मक**

☞ एक रैखिक मांग वक्र के लिए, कीमत के सापेक्ष मांग की लोच, मांग वक्र के प्रत्येक बिंदु पर **— परिवर्तित होती है, किंतु**
यह परिवर्तन शून्य तथा अनंत के मध्य होता है।

☞ रैखिक, आयतीय अतिपरवलय, क्षैतिज तथा ऊर्ध्व मांग वक्रों में से स्थिर लोच वाला वक्र नहीं है **— रैखिक**

☞ एक फर्म के कुल स्थिर लागत वक्र का ढाल होता है **— शून्य**

☞ उत्पादन की कुल लागत बराबर है
— स्थिर लागत + परिवर्तनशील लागत के

☞ ऋणात्मक सीमांत उपयोगिता की प्रारंभिक अवस्था में
— कुल उपयोगिता धनात्मक होती है

☞ दो वस्तुओं X और Y के बीच रूपांतरण दर को परिभाषित किया जाता है — $MRT_{XY} = \frac{MC_X}{MC_Y}$ **के रूप में**

☞ एक उपभोक्ता वस्तु X की अपेक्षा वस्तु Y की अधिक मात्रा तभी खरीदेगा, केवल जब — $\frac{MU_X}{P_x} < \frac{MU_Y}{P_Y}$

☞ एक उपभोक्ता संतुलन में होगा, जब — $\frac{MU_X}{P_X} = \frac{MU_y}{P_y}$

☞ सम-सीमांत तुष्टि गुण का कथन है

— $\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} = \frac{MU_z}{P_z}$ = **MU आय की प्रति इकाई**

☞ किसी निश्चित वस्तु के संदर्भ में उपभोक्ता संतुलन उस स्थिति में प्राप्त होगा, जब वस्तु की सीमांत उपयोगिता का मौद्रिक मान बराबर होगा **— वस्तु की कीमत के**

☞ मार्शल के अनुसार X तथा Y दो वस्तुओं के बीच एक उपभोक्ता के संतुलन की दशा तब होगी, जब — $MU_x / MU_y = P_x / P_y$

☞ उपभोक्ता व्यवहार के क्रमसूचक उपयोगिता अवधारणा के संदर्भ में उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होगी

— $\frac{Px}{Py} = \frac{MUx}{MUy}$ स्थिति में की

☞ एकाकी मांग लोच का अर्थ होता है **— 1 के बराबर**

☞ एक समोत्पाद वक्र एक सीधी रेखा होगी, यदि आगत

— पूर्ण स्थानापन्न हों

☞ पूंजी एवं श्रम की निरंतर प्रतिस्थापन दर्शाया जाता है

— चिकना उत्तल समोत्पाद वक्र द्वारा

☞ आयताकार अतिपरवलय (Rectangular hyperbola) आकार का वक्र है **— AFC (औसत स्थिर लागत)**

☞ आयताकार अतिपरवलय आकार वाले मांग वक्र की मांग लोच होगी

— इकाई के बराबर

☞ आप बाजार में वस्तु की कीमत

— उसकी सीमांत उपयोगिता के बराबर देते हैं

☞ सीमांत उपयोगिता की अवधारणा को विकसित किया

— एल्फ्रेड मार्शल ने

☞ समोत्पाद वक्र का ढाल मापता है

— प्रतिस्थापन की सीमांत दर

☞ सीमांत उपयोगिता को जिस सूत्र से ज्ञात किया जा सकता है, वह है

— $TU_n - TU_{n-1}$

☞ आय में क्षतिपूरक परिवर्तन पर निर्भर है

— हिक्स की स्थानापन्नता

☞ कीमत प्रभाव को आय तथा प्रतिस्थापन प्रभावों में बांटने के लिए 'लागत अंतर विधि' का उपयोग किया **— स्लट्स्की ने**

☞ स्लट्स्की थ्योरम बताती है कि कीमत में परिवर्तन होने में इससे मांग पर होने वाले प्रभाव को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है

— प्रतिस्थापन प्रभाव तथा आय प्रभाव

☞ स्लट्स्की के प्रतिस्थापन प्रभाव में उपभोक्ता

— एक ऊंचे उदासीनता वक्र पर चला जाता है

☞ स्लट्स्की प्रमेय के अनुसार, सभी हीन वस्तुओं के लिए कीमत में परिवर्तन का आय प्रभाव होता है **— धनात्मक**

☞ प्रति व्यक्ति आय तथा आय असमानता के स्तर के संबंध को प्रदर्शित करने वाला वक्र कहलाता है **— कुजनेट्स वक्र**

☞ एंजिल के नियम के अनुसार खाद्य-पदार्थों की मांग की लोच

— इकाई से कम होती है

☞ एंजिल वक्र दर्शाता है

— एक वस्तु की विभिन्न मात्राओं को जिन्हें एक उपभोक्ता विभिन्न आय स्तरों पर क्रय करना चाहता है।

☞ खाद्यान्न की मांग की लोच इकाई से कम होती है। यह निरूपित होता है **— एंजिल वक्र द्वारा**

☞ एंजिल वक्र व्यक्त करता है **— आय-उपभोग वक्र को**

☞ गिफिन वस्तुओं के लिए कीमत-उपभोग वक्र की आकृति होगी

— पीछे की ओर मुड़ा हुआ

☞ गिफिन वस्तु के संबंध में कीमत उपभोग वक्र

— किसी एक अक्ष की ओर झुक जाएगा

☞ वस्तु की मांग मात्रा व उसकी कीमत के बीच परिमाणात्मक संबंध की व्याख्या की जाती है **— मांग की लोच के आधार पर**

☞ लोचशीलता ज्ञात की जा सकती है

— $E_P = \frac{\Delta q}{\Delta p} \times \frac{p}{q}$ **सूत्र के प्रयोग द्वारा**

☞ एक रैखिक मांग वक्र के मध्य बिंदु पर मांग की कीमत लोच होती है

— इकाई के बराबर

☞ मांग की आड़ी लोच होती है

— संयुक्त मांग वाली वस्तुओं में ऋणात्मक

☞ जब मांग वक्र X-अक्ष के समानांतर एक सीधी रेखा के रूप में होता है, तो यह बताता है कि मांग की लोच **— अनंत है**

☞ जब मांग रेखा x-अक्ष के समांतर सीधी रेखा हो, तो मांग की लोच (ep) होगी **— ep = ∞**

☞ तिरछी मांग से अभिप्राय एक वस्तु की मांग में परिवर्तन के होने से होता है **— दूसरी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण**

☞ मांग वक्र प्रदर्शित करता है

— वस्तु की कीमत और वस्तु की मांग के विपरीत संबंध को

☞ एक वस्तु की कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप जब दोनों वस्तुओं की मांग घटती या बढ़ती है, तो मांग की तिरछी लोच होगी

— ऋणात्मक

☞ रिज रेखाओं पर श्रम व पूंजी की सीमांत उत्पादकता होती है

— शून्य

☞ उत्पादन की 'प्राविधिक सीमाएं' व्यक्त की जाती हैं

— ऋज रेखाओं के द्वारा

☞ एक विशेष समोत्पाद वक्र मानचित्र पर ऋज रेखाएं खींची जा सकती हैं **— दो**

☞ अन्य बातें समान रहें, कीमत में कमी के परिणामस्वरूप मांग के परिवर्तन को कहते हैं **— मांग में विस्तार**

☞ अपवादस्वरूप मांग वक्र वह होता है, जिसका

— झुकाव ऊपर दाईं ओर होता है

☞ यदि दो वस्तुएं पूरक हों, तो एक वस्तु की कीमत में वृद्धि के परिणामस्वरूप

— दूसरी वस्तु का मांग वक्र नीचे की ओर खिसक जाएगा

☞ यदि X तथा Y दो पूरक वस्तुएं हैं, तो Y की कीमत कम होने पर X की मांग पर प्रभाव होगा **— यह बढ़ जाएगी**

☞ एक उपभोक्ता के रूप में आप **— उपयोगिता को अधिकतम करेंगे**

☞ मांग की लोच इकाई के बराबर होगी जब सीमांत आय होगी **— शून्य**

☞ श्रम-विभाजन एवं विशिष्टीकरण (The division of labour and specialisation) उत्पन्न करता है **— आंतरिक बचतें एवं बाह्य बचतें**

☞ किसी वस्तु के वैकल्पिक प्रयोग होने पर उसकी मांग हो जाती है

— अधिक लोचदार

☞ ''उदासीनता वक्र विश्लेषण'' नई बोतल में रखी पुरानी शराब है'' यह कथन है **— रॉबर्ट्सन का**

- सही सुमेलित हैं -

गॉसेन का नियम	–	सीमांत उपयोगिता
ग्रेशम का नियम	–	मुद्रा का संचलन
से का नियम	–	मांग और आपूर्ति
वेगनर का नियम	–	सार्वजनिक व्यय

☞ गॉसेन का द्वितीय नियम कहलाता है

— सम-सीमांत उपयोगिता नियम

☞ गॉसेन का पहला नियम है

— ह्रासमान सीमांत उपयोगिता का नियम

☞ ह्रासमान सीमांत उपयोगिता का नियम सर्वप्रथम प्रतिपादित किया था

— गॉसेन ने

- सही सुमेलित हैं -

मांग का गणनावाची उपयोगिता सिद्धांत	–	अल्फ्रेड मार्शल
मांग का प्रकट वरीयता सिद्धांत	–	सैम्युल्सन
मांग तटस्थता वरीयता सिद्धांत	–	हिक्स
अनिश्चितता के अंतर्गत उपयोगिता सूचकांक सिद्धांत	–	जॉन बोन न्युमैन तथा मॉर्गस्टर्न

☞ उपादान प्रतिफल के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत के प्रतिपादकों का कालानुक्रमिक क्रम है-

- जे.बी. क्लार्क - मार्शल - वालरस - जेवॉन्स

☞ **कथन (A) :** गिफिन का विरोधाभास वास्तविक संसार में कम घटित होता है।

कारण (R) : जिन वस्तुओं के उचित प्रतिस्थापन उपलब्ध रहते हैं, उन घटिया वस्तुओं को कम परिभाषित किया जाता है ।

- (A) सही है, परंतु (R) गलत है।

☞ मांग सिद्धांत के क्रमिक विकास का क्रम है

- मार्शल का मांग सिद्धांत, अनधिमान वक्र रेखा, स्वप्रकाशित अधिमान सिद्धांत, मांग का मंद अधिमान क्रम सिद्धांत।

☞ प्रतिस्थापन की लोच है

- आगत-कीमत अनुपात में परिवर्तन के प्रति आगत अनुपात की प्रतिक्रियाशीलता का माप

☞ यदि श्रम और पूंजी में किसी भी आनुपातिक परिवर्तन के साथ MP_L/MP_K नहीं बदलता है,तो उत्पादन फलन होता है

- समस्थितिक

☞ **कथन (A) :** समलागत रेखा एक सरल रेखा है।

कारण (R) : दो निविष्टियों के बीच विनिमय की विपणन दर स्थिर है।

- (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) की (A) सही व्याख्या है।

- सही सुमेलित हैं -

कई समुच्चय जिन्हें उपभोक्ता क्रय कर सकता है	–	बजट रेखा
दो वस्तुओं के कई समुच्चय जो उपभोक्ता को समान संतुष्टि देते हैं	–	तटस्थ रेखा
तटस्थ वक्र रेखाओं का एक सेट	–	तटस्थ मानचित्र
बजट रेखा का स्पर्श बिंदु और तटस्थ रेखा	–	उपभोक्ता संतुलन

☞ सत्य हैं–

उदासीनता (तटस्थ) वक्र बाएं से दाएं ढलवां होता है, उदासीनता वक्र दोनों अक्षों के मूल बिंदु पर उत्तल होता है और उदासीनता वक्र कभी एक-दूसरे को काटता नहीं है

☞ विकास के आधार पर कालानुक्रमिक क्रम है–

मांग का नियम, ह्रासमान सीमांत उपयोगिता का नियम, उदासीनता वक्र विश्लेषण और अभिव्यक्त अधिमान विश्लेषण

सम-सामयिक
घटना चक्र

घटना चक्र

Android App

DOWNLOAD

GET IT ON Google Play

या

https://shop.ssgcp.com

पर ऑनलाइन आर्डर भेजें अथवा अपने नज़दीकी पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करें